विषय : मिट्टी की पुकार

मिट्टी की गंध

बारिश की शब्द सुनकर
मैं बाहर की ओर देखा
अंदर मैं अकेला था
लेकिन मेरा घर भरा लोगों से।

आ गया एक सुंदर गंध
मिट्टी की गंध
पेड़ों और पौधे नृत्य किया
चिड़ियों ने गाया
एक गान बना बारिश
उस गंध में।

अचानक कुछ लोगों की
रोना सुना मैं,
बाहर निकला देखने केलिए
वहाँ था एक शरीर निश्चलता से।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

मुझे पता नहीं क्या हुआ ?
बड़ा हुआ बारिश की शब्द,
बाहर लथा शरीर मिट्टी की गंध से भरा,
मैं शेया |
तब मैं प्रकृति को देखा
अचानक एक शब्द से
मैं कँपने शुरु किया
"क्या हुआ ?" मैं पूछा
"माता और पिता ?"
निशब्दता से भरा अस्पताल
मेरा शेना शब्द तोड़ा |
मेरा स्वप्न आज भी माता और पिता का,
वहाँ दो शरीरों था निश्चलता से...
खतम हुआ बारिश, लेकिन
वहाँ था मिट्टी की गंध |
"मिट्टी की पुकार, कुछ समय
वह अच्छा नहीं, वह हमारा अंत...." पिता की वाक्यों
सोचकर मैं शेता
तब हुआ मिट्टी की गंध
वह मेरा माँ और पिता का था |

तब हुआ बारिश मेरा आँसू को लापा,
मिट्टी की गंध आज भी मेरा साथ है
मुझे हँसी बनकर, मेरा माता और पिता के बिना,,
मैं मुस्करा, माता और पिता केलिए मुस्करा
अगला जीवित केलिए, मैं तैयार हुआ।
मिट्टी की पुकार मुझे अकेला बना
लेकिन,
मिट्टी की गंध वह
मेरा पिता और माता की गंध
मेरा जीवन की गंध
मेरा खुश की गंध
मेरा मन की गंध
वह मुझे जीवन दिया।
ईश्वर की पुकार है
मिट्टी की पुकार
मेरा खुश की पुकार
मेरा माता और पिता की पुकार
लेकिन वह मिट्टी की गंध
मेरा जीवन और मन की गंध
मेरा ही गंध हुआ॥